वर्ष :: 33 अंक : 03
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 16 अक्टूबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-
निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

जानलेवा बनी खतरे में पड़ी जमापूंजी

सहारा ने बनाया बेसहारा... एजेंट और निवेशकों में भुगतान को ले संशय, बोकारो में एक और मौत

विजय कुमार झा -

बोकारो : अपनी उम्र भर की गाढ़ी कमाई भविष्य के लिए संजोकर रखने वाले हजारों-हजार लोगों की उम्मीदें आज दम तोड़ती नजर आ रही हैं। जिस जमापूंजी को उन्होंने अपने आने वाले कल के लिए हिफाजत में समझकर सहारा इंडिया में निवेश किया था, वह खतरे में है। लोगों को उनके पैसे मिलेंगे भी या नहीं, यह अपने-आप में एक बड़ा सवाल बन गया है। वैसे तो देशभर में सहारा इंडिया में निवेश करनेवाले लोगों की हालत खस्ता है, लेकिन बोकारो में जिस कदर आए दिन खतरे में पड़ी इस जमापूंजी के कारण मौत के मामले सामने आ रहे हैं, वह वास्तव में चिंतनीय है। पिछले दिनों जिले के बेरमो से सहारा के एक और एजेंट की मौत का मामला सामने आया। सहारा इंडिया कंपनी के अभिकर्ता मकोली नीचे धौड़ा निवासी राजकुमार चौहान (40) का ब्रेन हेमरेज होने से रांची स्थित मेडिका अस्पताल निधन हो गया। राजकुमार की बहन फूल कुमारी देवी सहित अन्य परिजनों का दावा है कि राजकुमार से लोग फोन करके पैसा दिलाने की मांग करते थे। कुछ लोग घर पर भी आकर पैसों की मांग करने लगे थे, इसलिए उन्हें ज्यादा टेंशन हो गया था। अपने घर की बहन, मां, भाई, पिताजी सहित उनके ससुर, साला सभी का पैसा डूबा हुआ था। सिर्फ राजकुमार की बहन का 9 लाख रुपए डूबा हुआ है। घर के लोग परेशान नहीं करते थे, लेकिन बाहर के लोग कहते थे कि पैसा डूबा है तो आप व्यवस्था करके दीजिए, जहां जाते थे, वहां लोग उन्हें परेशान करते थे। कहा, लगभग एक वर्ष से पुराना काम का कमीशन तक नहीं मिल रहा है। राजकुमार पूरी तरह टूट चुके थे। वह अपने पीछे दो पुत्री तथा दो पुत्र छोड़ गए हैं।

पहले एजेंट कर चुके हैं आत्महत्या

कुछ माह पूर्व खलारी के एक एजेंट ने आत्महत्या कर ली थी। इसी तरह, बोकारो जिले में पिछले वर्ष 14 नवंबर को सहारा इंडिया द्वारा भुगतान नहीं होने से परेशान सहारा इंडिया के अभिकर्ता आईईएल थाना क्षेत्र गवर्नमेंट कॉलोनी लाल फ्लैट समीप निवासी गणेश नोनिया (45) नामक एजेंट ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। वह 25 लाख रुपए ग्राहकों की देनदारी का भुगतान नहीं होने से अवसाद में थे। गणेश अपने पीछे तीन बेटी और एक 12 साल का बेटा सहित पत्नी को छोड़ गए थे।

अकेले बेरमो में 200 करोड़ बकाया

बकाए रकम की बात करें तो अकेले बेरमो क्षेत्र में ही लगभग 200 करोड़ रुपए की जमापूंजी का भुगतान बकाया है। इसमें सिर्फ फुसरो इलाके से लगभग 80 करोड़ रुपए की लोगों की देनदारी बाकी है। शेष पैसे गोमिया सेक्टर व अन्य छोटे छोटे फ्रेंचाइजी के हैं। सहारा इंडिया द्वारा पैसे का भुगतान लगभग बंद कर दिया गया है।

बिहार-झारखंड के कई जिलों का नियंत्रण बोकारो से

वरीय अभिकर्ताओं के अनुसार सहारा इंडिया के बोकारो जोन से बोकारो जिला सहित बिहार-झारखंड के कई जिलों का नियंत्रण होता है। इनमें भागलपुर, पूर्णिया, धनबाद, देवघर, गोमिया तथा बगोदर शामिल हैं। सीनियर एजेंटो ने देनदारी का भुगतान न होने के पीछे सहारा के क्षेत्रीय प्रबंधन को जिम्मेदार ठहराया है। उनका कहना है कि रीजनल ऑफिस के अधिकारी व कर्मी अपनी नौकरी बचाने के चक्कर में मुख्यालय में पैसा भुगतान का डिमांड जोरदार ढंग से नहीं कर पा रहे हैं। इस कारण भुगतान नहीं हो रहा है। बता दें कि आए दिन सेक्टर-4 स्थित बोकारो जोन के कार्यालय में इसे लेकर हंगामे भी होते रहे हैं।

इधर, झारखंड में ढ़ाई लाख से भी ज्यादा लोगों के 3 हजार करोड़ रुपए संकट में

रांची : सहारा इंडिया की विभिन्न योजनाओं में झारखंड के तकरीबन ढ़ाई लाख से भी ज्यादा लोगों के लगभग 3 हजार करोड़ रुपये फंसे हैं। जमा योजनाओं की पॉलिसी मैच्योर्ड होने के बाद भी लगभग दो वर्ष से भुगतान पूरी तरह बंद है। राज्य के अलग-अलग इलाकों में स्थित सहारा के दफ्तरों में हर रोज बड़ी तादाद में पॉलिसी की राशि के भुगतान की मांग लेकर पहुंच रहे हैं, लेकिन उन्हें मायूस होकर लौटना पड़ रहा है। रांची, हजारीबाग, रामगढ़, बेरमो, बोकारो, धनबाद, जमशेदपुर सहित कई शहरों में निवेश करने वाले लोगों ने सहारा के दफ्तरों के बाहर प्रदर्शन भी किया है, लेकिन इन शाखाओं के प्रबंधकों और कर्मियों के पास कोई जवाब नहीं है। कंपनी के लिए काम करने वाले 60 हजार से भी ज्यादा कर्मी हर रोज हो रहे हंगामों से परेशान हैं। निवेशकों का कहना है मैच्योरिटी की राशि का भुगतान न होने से किसी का इलाज के अभाव में निधन हो गया तो किसी के बच्चों की पढ़ाई से लेकर शादी तक रुक गई। बेरमो के रामदास साव के मुताबिक, उन्होंने अपने जीवन की पूरी कमाई 20 लाख रुपये सहारा इंडिया में जमा किए, लेकिन उन्हें एमआईएस तक का भुगतान नहीं किया जा रहा। हजारीबाग के शिवपुरी निवासी संतोष कुमार के एक लाख रुपये फंसे हैं और वह दो साल से परेशान हैं। बेरमो के बबलू गुप्ता और उनकी पत्नी राजकुमारी भारती का कहना है कि पैसे न मिलने की वजह से उन्हें अपनी बेटी का विवाह स्थगित करना पड़ा। इसी तरह प्रदीप कुमार भगत ने भी 21 लाख रुपये जमा किए हैं, लेकिन उन्हें ब्याज तक की रकम नहीं दी जा रही है।

फैक्ट्स... 1978 में हुई थी सहारा इंडिया की स्थापना

सहारा इंडिया परिवार हमारे भारत देश की बहु-व्यापारिक अर्थात कई व्यापार में अपना पैसा लगाने वाली कंपनी है। वित्तीय सेवाओं, फाइनेंस हाउसिंग फाइनेंस, म्यूचुअल फंड, जीवन बीमा, फिल्म निर्माण, खेल, पर्यटन, नगर विकास आदि क्षेत्रों में फैला हुआ है। सहारा इंडिया परिवार का हेड-क्वार्टर अर्थात मुख्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थित है। इसके संस्थापक एवं मालिक सुब्रत रॉय ने 1978 में इसकी स्थापना की थी। आज सहारा इंडिया परिवार में लगभग 1.2 मिलियन वेतनभोगी कर्मचारी, सलाहकार, फील्ड वर्कर, एजेंट और व्यावसायिक सहयोगी शामिल हैं, लेकिन सभी बदहाल हैं।

भुखमरी की कगार पर हैं कर्मी, 12 लाख कार्यकर्ता आत्महत्या को विवश

कंपनी के कमीशन एजेंट और कर्मचारियों का कहना है कि जमाकर्ताओं का भुगतान नहीं होने से हालत बहुत खराब है। वे भुखमरी की कगार पर हैं। खुद के घर में खाने-पानी के लाले पड़े हैं, ऊपर से जमाकर्ता उनसे अपना पैसा मांग रहे हैं। जबकि, सहारा कर्मियों को पिछले कई सालों से वेतन ही नहीं मिला है। भुगतान नहीं होने के कारण आये दिन सहारा कर्मचारियों और एजेंट मारे जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार पूरे देश में करीब 12 लाख कार्यकर्ता और 13 करोड़ जमाकर्ता प्रभावित और बेरोजगार हैं। यह पूरे देश की आबादी का बड़ा हिस्सा है। सहारा इंडिया परिवार के मामले का निस्तारण नहीं हाने से यह सभी बेरोजगार, प्रभावित, परेशान और भुखमरी की कगार पर हैं। इसकी वजह से हजारों लोग आत्महत्या कर चुके हैं। इन्हें परिवार का भरण-पोषण करने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा, इसलिए आत्महत्या करने को मजबूर हैं। ये अलग बात है कि तनाव चरम सीमा पर है, परंतु जिंदगी से मुंह मोड़ना भी सही नहीं ठहराया जा सकता।

जानिए... देशभर में क्या है बदहाली

कंपनी के अधिकारियों पर चल रहे कई मुकदमे, 10 साल से जारी है कानूनी लड़ाई

प्राप्त जानकारी के अनुसार जमाकर्ताओं द्वारा मुकदमा दर्ज कराए जाने के कई मामलों में सहारा कर्मचारियों जमानत पर हैं। सहारा के कई वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों पर धोखाधड़ी सहित कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज है। पिछले दिनों कानपुर के काकादेव थाना क्षेत्र में सहारा प्रमुख सुब्रत राय सहित कई शीर्ष डायरेक्टर पर मुकदमे दर्ज कराए गए हैं। कुछ महीने पहले सहारा के जोनल कार्यालय काकादेव में एजेंटों ने जमा कर्ताओं का भुगतान नहीं होने पर दफ्तर में ताला डाल दिया था, जिसके चलते रात भर कर्मचारी कार्यालय में बंद रहे थे। खबरों के अनुसार सहारा इंडिया की पिछले दस साल से कोर्ट में कानूनी लड़ाई चल रही है। इस वजह से देश में लाखों लोग बेरोजगार हो गए हैं।

– संपादकीय –

फिर पिछड़ों की सियासत

पिछड़ा वर्ग हमेशा से ही हमारे देश के नेताओं के लिए एक ट्रंप कार्ड की तरह रहा है, जिसे वे हर बार चुनावी हथकंडे के रूप में इस्तेमाल कर अपनी सियासी रोटी सेंकते ही सेंकते हैं। इन दिनों बिहार में एक बार फिर पिछड़ा वर्ग के लोगों (ओबीसी) को राजनीतिक दल के लोगों ने अपने पक्ष में करने की कोशिशें तेज कर दी हैं। पिछड़ों की राजनीति के लिए भाजपा और जदयू आमने-सामने आ गये हैं। पूरे बिहार में इसके लिए दोनों दलों के नेता भी सड़क पर उतर रहे हैं। यह सारी कवायद शुरू हुई पटना हाईकोर्ट के एक आदेश से। पिछले दिनों कोर्ट ने स्थानीय निकाय चुनाव में मौजूदा आरक्षण व्यवस्था पर रोक लगा दी। हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि अगर मौजूदा हालात में चुनाव होते हैं तो अति पिछड़ों के लिए आरक्षित सीट सामान्य कैटेगरी की मानी जायेगी। इस आदेश के तुरंत बाद भाजपा राज्य में आक्रामक रूप पर उतर आयी और नीतीश कुमार को अति पिछड़ों का विरोधी बताने लगी। वहीं, जदयू पलटवार करते हुए पूरे प्रकरण के लिए भाजपा को ही इसका दोषी ठहरा रही है। भाजपा नेता पूरे राज्य में इस मुद्दे पर लोगों को बता रहे हैं कि नीतीश कुमार की लापरवाही के कारण निकाय चुनाव से आरक्षण समाप्त हो रहा है। वहीं, जदयू नेताओं का दावा है कि बिहार में अति पिछड़ा वर्ग को आरक्षण दिए बिना निकाय चुनाव संभव ही नहीं है और आरोप यह कि भाजपा हाईकोर्ट के इस फैसले पर लगातार भ्रम फैलाने की कोशिश कर रही है। बिहार में भले ही यह मुद्दा पटना हाईकोर्ट के फैसले के बाद गरम हुआ, लेकिन हकीकत यह है कि इस सियासी टकराव के पीछे खेल कुछ और ही है। जब से बिहार में नीतीश कुमार ने भाजपा का साथ छोड़कर राजद के साथ महागठबंधन कर सरकार बनायी है, तब से यह सवाल उठ रहा है कि अगले चुनाव में अति पिछड़े वोटरों का रुख क्या होगा? राज्य में अब तक सत्ता की चाबी अति पिछड़ों के हाथ में ही रही है। 2024 आम चुनाव में इस राज्य की 40 लोकसभा सीटों का भी अहम योगदान होगा। बिहार में पिछड़े और अति पिछड़ों का वोट लगभग 51 फीसदी है। इसमें से यादव वोट हटा दें तो बाकी वोट 2004 के बाद अधिकतर भाजपा-नीतीश को ही मिलता रहा है। 2015 में जब नीतीश कुमार राजद के साथ आकर विधानसभा चुनाव लड़े थे, तब अधिकतर अति पिछड़ा वोट महागठबंधन को मिला। दरअसल, अति पिछड़ों के बीच नीतीश कुमार की पकड़ रही है और यही उनका मूल वोट-बैंक रहा है। यही कारण है कि नीतीश जिधर जाते हैं, उनके साथ यह वोट आने से उस गठबंधन का पलड़ा भारी हो जाता है, इसलिए राजद और जदयू के एक होने के बाद अगर इनमें मुस्लिम वोट और जोड़ लें तो महागठबंधन कागजों पर बहुत मजबूत दिखने लगता है। भाजपा को भी इसका एहसास है और नीतीश कुमार से अति पिछड़ा वोट छीनने की कोशिश में वह अभी से जुट गयी है। भाजपा का आकलन है कि सवर्ण राजद के साथ नहीं आएंगे और अगर अति पिछड़ा उनके साथ आ गये, तब नीतीश-तेजस्वी के अलायंस का लाभ समाप्त हो जाएगा। वहीं महागठबंधन को भी यह मालूम है कि अगर 2024 में उसे भाजपा को राज्य में मात देनी है तो नीतीश कुमार को अपना वोट बैंक ट्रांसफर करवाना ही होगा। कुल मिलाकर 2024 की चुनावी तैयारियों में ओबीसी पॉलिटिक्स एक बार फिर केंद्र बिन्दु बन चुका है। अब यह इस वर्ग की जनता पर निर्भर है कि वह नेताओं के हथकंडे का जरिया बनती है या खुद की सूझबूझ का परिचय देती है। यह आने वाला वक्त ही तय करेगा।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

मंदी की ओर बढ़ती दुनिया

विश्व में मंदी महंगाई का खतरा एक बार फिर गहराता दिख रहा है। डॉलर करेंसी के सामने सभी देशों की मुद्राओं का अवमूल्यन हो रहा है। इसका सबसे ज्यादा दबाव जापान पर देखने को मिला है। जापानी मुद्रा येन को संभालने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर निकालने पड़े, जिसके कारण 1998 के बाद जापान पहली बार मुद्रा संकट में फंस गया। चीन के बाद सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा का भंडार जापान के पास था। उसके बाद भी जापान को अर्थव्यवस्था के संकट का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिका का डॉलर इंडेक्स नई ऊंचाइयां छूता जा रहा है। पिछले 9 महीने में 15 फीसदी की वृद्धि हो चुकी है। सभी देशों के विदेशी मुद्रा भंडार में करेंसी को संभालने के लिए जो डॉलर खर्च किए गए हैं, उससे सारी दुनिया महंगाई और मंदी की ओर जाती हुई दिख रही है।

महंगाई बढ़ने से ब्याज दरें भी अमेरिका सहित सभी देशों में बढ़ने लगी है। अमेरिकी डॉलर को लेने के लिए बाजार में मांग बढ़ गई और डॉलर में भी सट्टेबाजी शुरु हो गई। पहली बार ऐसा हो रहा है, ऐसा नहीं है। 1973 में इजिप्ट और सीरिया के बीच युद्ध हुआ था। उस समय अमेरिका को इजरायल की मदद मिली। इसके बाद अरब देशों में अमेरिका को तेल का निर्यात बंद कर दिया था। 1974 में अमेरिका की महंगाई बड़ी तेजी के साथ बढ़ने लगी थी। अमेरिका की ब्याज दरें 20 फ़ीसदी पर पहुंच गई थी। उसके बाद वही हुआ, जो वर्तमान में हो रहा है। अमेरिकी डॉलर ज्यादा मजबूत होने लगा। उस समय भी अमेरिका मंदी और बेरोजगारी का शिकार हो गया था।

तत्कालीन राष्ट्रपति रेगन को डॉलर मुद्रा का अवमूल्यन करने विवश होना पड़ा था। 1985 में जब मुद्रा संकट का हाहाकार मचा हुआ था, उस समय यह मार्च में बैठक हुई, जिसमें पश्चिमी जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान और अमेरिका के बीच एक समझौता हुआ। इस समझौते के बाद जापान, फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी की मुद्रा का मूल्य 50 फीसदी बढ़ गया था। केंद्रीय बैंकों ने मुद्रा बाजार में सीधा हस्तक्षेप किया। इसके बाद जापान की अर्थव्यवस्था मंदी का शिकार हो गई थी। 1985 का यह समझौता भी ज्यादा दिन नहीं चल पाया था। 1987 में फ्रांस ने इस समझौते को रद्द कर दिया।

जानकारों के अनुसार डॉलर इंडेक्स संतुलित होने पर ही डॉलर का अस्तित्व बना रहेगा, अन्यथा निर्यात को लेकर सभी देशों के बीच में मुद्रा का जो संकट आया है, उसको टाला जा सकता है। सारी दुनियां में पिछले 30 वर्षों में काफी विकास हुआ है। डिजिटल लेनदेन बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। सभी देश जिन देशों से व्यापार करते हैं, उनसे उनके हित जुड़े होते हैं। प्रतिबंध लगाने के बाद कई देशों ने व्यापार और भुगतान के तरीके अपने हिसाब से तय कर लिए, जिसके कारण प्रतिबंध भी बेअसर साबित हुए। वैश्विक व्यापार संधि के बाद मुक्त व्यापार होने से डॉलर मुद्रा पर सभी देश डॉलर पर आश्रित हैं। श्रीलंका, पाकिस्तान सहित छोटे एवं विकासशील देश मुद्रा संकट में फंस गये हैं। वैश्विक व्यापार एवं विदेशी कर्ज की वर्तमान व्यवस्था को बनाये रखना है तो विश्व बैंक को डॉलर मुद्रा को स्थिर रखने एवं कर्ज की ब्याज दरों को सीमित रखना होगा। यदि ऐसा समय रहते नहीं हुआ तो सारी दुनिया आर्थिक संकट में फंसेगी। इसका परिणाम तृतीय विश्वयुद्ध के रूप में भी सामने आ सकता है। वहीं कर्ज की अदायगी भी दिवालिया होने की स्थिति हो सकती है।

– प्रस्तुति : गंगेश

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
धरती के आभूषण जंगल
सोखें कलुष प्रदूषण जंगल
नदियों-नालों के स्वर 'कल-कल'
जंगल में मंगल हैं हर पल
लोग आज न कल समझेंगे
इनकी नहीं कभी है होनी हार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल।

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में नदिया बहती हैं
नदिया बस बहती रहती हैं
नदियां रुकती नहीं किनारे
चाहे पत्थर, पेड़ पुकारे
अपनी धुन में बहतीं नदियां
करती जंगल का सुंदर श्रृंगार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल।

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में झरने गाते हैं
पर्वत से पथ बनवाते हैं
पत्थर भारी, बहुत बड़ा हो
कोई भी अवरोध खड़ा हो
डरते हैं न रुकते झरने
कर लेते हैं हर बाधाएं पार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल।

चल जंगल चल, चल जंगल चल
प्राणवायु देता है जंगल
'विष-वायु' पीता है जंगल
इस विधि वन जीवनदाता है
सभी प्राणियों को भाता है
ऐसे करता जज्ब कार्बन
अपने भीतर वन भू पर भरमार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल।

कुमार मनीष अरविन्द

हजार साल की गुलामी दूर कर 'इंडिया' को भारत बनाएगी नई शिक्षा नीति : प्रो. शर्मा

मंथन... डीपीएस बोकारो ने की 'एनईपी 2020' पर राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी

» 64 कलाओं का केंद्र बनेंगे विद्यालय
» समाज में लौटेगी गुरु-परंपरा

संवाददाता

बोकारो : 'भारत बदल रहा है। शिक्षा के माध्यम से समाज के केंद्र में शिक्षकों को रखकर 'इंडिया' को भारत बनाने की सोच के साथ ही नई शिक्षा नीति 2020 बनाई गई है। यह देश में क्रांतिकारी बदलाव का वाहक बनेगी और एक हजार साल की गुलामी को दूर करेगी। इसके लिए विद्यालय में शैक्षणिक-व्यवस्था का परिवर्तन अनिवार्य है। जब तक यह बदलाव नहीं होगा, देश नहीं बदलेगा और यह नई नीति विद्यालय की परिभाषा बदलेगी।' ये बातें नई शिक्षा नीति 2020 तैयार करने में अहम भूमिका निभाने वाले नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग (एनआईओएस), भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष प्रो. सीबी शर्मा ने कही। प्रो. शर्मा डीपीएस बोकारो की मेजबानी में नई शिक्षा नीति 2020 को लेकर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय से संबद्ध सेंटर फॉर एजुकेशनल डेवलपमेंट (सीईडी) फाउंडेशन की ओर से डॉ. राधाकृष्णन सहोदया स्कूल कांप्लेक्स, बोकारो के तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

उन्होंने कहा कि 1700 वर्ष पहले भारत विश्व में सबसे अमीर देश था। हम 64 कलाओं के मालिक थे। दुनिया हमारा लोहा मानती थी। एक बार फिर भारत को अपनी सनातन गुरु-परंपरा से युक्त शिक्षा-प्रणाली देकर विश्वगुरु और सोने की चिड़िया बनाने की सोच के साथ नई शिक्षा नीति बनाई गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल से पहली बार देश में अब 1947 से पहले वाली सोच पर काम किया जा रहा है। मैकाले की शिक्षा पद्धति देश से अंग्रेजी शासन खत्म होने के बाद भी भारतीयों को अंग्रेजी मानसिकता की दासता में बांधे रखने की एक साजिश थी, जो अब दूर होगी। विद्यालय 64 कलाओं का केंद्र होंगे, जहां बच्चे अपनी आंतरिक इच्छा के अनुकूल शिक्षा पाकर उसी क्षेत्र में अपना करियर व पेशा चुन सकेंगे।

इसके पूर्व, मुख्य वक्ता प्रो. शर्मा सहित सीईडी फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शी नायक, डॉ. राधाकृष्णन सहोदया स्कूल कॉम्प्लेक्स के अध्यक्ष एवं डीपीएस बोकारो के प्राचार्य ए. एस. गंगवार, सहोदया के जिला प्रशिक्षण समन्वयक सह एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल के प्राचार्य फादर रेजी सी. वर्गीस तथा कॉम्प्लेक्स के महासचिव व एआरएस पब्लिक स्कूल के प्राचार्य बिश्वजीत पात्रा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। विद्यालय की छात्राओं ने मनभावन स्वागत गान व नृत्य प्रस्तुत किया। अपने स्वागत संबोधन में श्री गंगवार ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की महत्ता व उपादेयता पर प्रकाश डाला। परिचयात्मक सत्र में सीईडी फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. नायक ने एनईपी 2020 लागू करने व प्रभावशाली अध्यापन की दिशा में सीबीएसई द्वारा तय किए गए मानकों और विद्यालय स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों पर विस्तार से चर्चा की।

'देश में बदलाव का अगुवा बनें शिक्षक'

अपने संबोधन में प्रो. सीबी शर्मा ने शिक्षकों से कहा- पहले की तरह विद्यालय और समाज के केंद्र में जब शिक्षक होंगे तभी भारत बदलेगा। शिक्षक जीवन बनाते हैं। आप जो चाहेंगे, बच्चे वही बनेंगे। जिसकी जिस क्षेत्र में रुचि है, उसे उसी तरफ प्रोत्साहित करें। वह बच्चा निश्चय ही उस क्षेत्र में एक सफल व्यक्ति बनेगा। बच्चों को सभी कौशल में पारंगत बनाना ही नई शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य है। यही हमारी परंपरा भी थी। उन्होंने शिक्षकों से द्रोणाचार्य की भूमिका निभाते हुए एनईपी 2020 के जरिए देश में परिवर्तन का अगुवा बनने की अपील की। उन्होंने नई शिक्षा नीति 2020 तैयार करने से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। इसके बाद इस नीति के तहत मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा, देशज खिलौनों से पढ़ने-लिखने की क्षमता का विकास, अमीरी-गरीबी का शैक्षणिक भेदभाव-उन्मूलन, बस्तारहित (बैगलेस) अनुभव-आधारित शिक्षण, शिक्षक-प्रशिक्षण, गांवों में शैक्षणिक सशक्तिकरण आदि पर बिंदुवार विस्तृत जानकारी दी। इस क्रम में उन्होंने प्रतिभागी शिक्षकों के प्रश्नों का उत्तर दे उनकी जिज्ञासाएं भी शांत कीं।

200 से अधिक प्रतिनिधि हुए शामिल

इस अवसर पर एनआईओएस (भारत सरकार) के एकेडमिक डिवीजन की अंशुल खरबंदा ने एनईपी को धरातल पर उतारने तथा इसे स्कूलों में लागू करने से संबंधित मुख्य क्षेत्रों की जानकारी दी। कार्यक्रम में सहोदया से जुड़े बोकारो के 21 विभिन्न विद्यालयों के 200 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हुए। समापन राष्ट्रगान से हुआ। इस अवसर पर डीपीएस बोकारो के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत कला-प्रदर्शनी और यहां के महिला स्वावलंबन केंद्र 'कोशिश' के हस्तशिल्प उत्पादों की लगाई गई प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र बनी रहीं।

साइंस फिल्म फेस्टिवल राज्यस्तरीय तीसरे आयोजन में 12 से अधिक फिल्मों की हुई स्क्रीनिंग

वैज्ञानिक सोच आज की आवश्यकता, बीएसएल सहयोग को तत्पर : डीआई

संवाददाता

बोकारो : बीएसएल के मानव संसाधन विकास केंद्र के मुख्य प्रेक्षागृह में साइंस फॉर सोसाइटी (झारखंड) तथा बीएसएल के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय तीसरे झारखंड साइंस फिल्म फेस्टिवल का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने बोकारो विधायक बिरंची नारायण तथा उपायुक्त बोकारो कुलदीप चौधरी की उपस्थिति में किया। इस अवसर पर जनरल सेक्रेटरी (एसएफएस, झारखंड), डीएनएस आनंद, मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी (नगर सेवाएं) सह चेयरमैन (एसएफएस, बोकारो) बीएस पोपली, महाप्रबंधक (शिक्षा) सह चीफ एडवाइजर (एसएफएस, बोकारो) मीनम मिश्रा, सेक्रेटरी (एसएफएस, बोकारो), राजेन्द्र कुमार सहित अन्य गणमान्य अतिथि तथा बीएसएल संचालित विभिन्न विद्यालयों तथा बोकारो के निजी विद्यालयों के शिक्षक, शिक्षिकाएं, छात्र एवं छात्राएं उपस्थित थे। बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेंदु प्रकाश ने अपने उद्बोधन में वैज्ञानिक सोच को इस सदी की जरूरत बताते हुए विज्ञान फिल्म फेस्टिवल जैसे कार्यक्रम की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि बीएसएल प्रबंधन ऐसे आयोजनों के लिए तत्पर है और भविष्य में भी इसे आगे बढ़ाने के लिये प्रयासरत रहेगा। विधायक बोकारो बिरंची नारायण ने इस तरह के आयोजन के लिए सेल-बोकारो इस्पात प्रबंधन की सराहना की। उपायुक्त ने इस तरह के कार्यक्रम को बच्चों सहित जन सामान्य में वैज्ञानिक सोच विकसित करने के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण पहल बताया।

फिल्म फेस्टिवल की शुरुआत फिल्म 'लाइफ ऑफ स्नेल' को प्रदर्शित कर की गई। दो दिनों तक चलने वाले इस साइंस फिल्म फेस्टिवल में देश के विभिन्न राज्यों के निर्देशकों द्वारा निर्देशित 12 से अधिक फिल्में यथा ग्रीन, डीके, वाटर वारियर, एन इंजीनियर्ड ड्रीम, ब्रावो बनाना, अरुणाचल वर्चुअल आर्काइव, वादे, द ग्रेनिता स्टोरी, आउटकम साउंड्स फ्रॉम बुक्स एंड बैग्स, कमीज, कोरल वोमन तथा जादव मोलाई पायेंग जैसी फिल्में प्रदर्शित की गईं। लगभग दो हजार बच्चों ने इसका लाभ उठाया।

ऐश पौंड फिर टूटने के खिलाफ होगा जोरदार आंदोलन : सिंह

दामोदर बचाओ आंदोलन एनजीटी में मुकदमे की तैयारी में

संवाददाता

बोकारो : बोकारो इस्पात संयंत्र के पावर प्लांट का ऐश पौंड का एक बार पुनःटूट जाना दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। इससे पता चलता है कि इस्पात संयंत्र के पदाधिकारी कितने लापरवाह एवं अनुभवहीन हैं। ऐश पौंड इसी वर्ष मई माह मे टूटा था। इससे इस्पात संयंत्र के अधिकारियों ने सबक नहीं ली, जिसके कारण ऐश पौंड पुनः टूट गया।

ये बातें दामोदर बचाओ आंदोलन के जिला संयोजक प्रवीण कुमार सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि छाईयुक्त जल घरों में घुस गया और इससे दामोदर नदी को भी प्रदूषित किया गया है। दामोदर बचाओ आंदोलन इस घटना पर गंभीर है। हमलोग सरयू राय के नेतृत्व में इस घटना के विरोध में आंदोलन करेंगे। दामोदर बचाओ आंदोलन पूरी घटना की उच्चस्तरीय जांच की मांग करती है। उन्होंने दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की भी मांग की।

श्री सिंह ने कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के खिलाफ वह एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल) की की अदालत में मुकदमा दायर करने की तैयारी कर रहे हैं। अधिवक्ता से सलाह कर रहे हैं। बहुत जल्द ही बोकारो इस्पात संयंत्र के खिलाफ एनजीटी को कोलकाता कोर्ट में मुकदमा दायर करेंगे।

डीवीसी को लगा था 89.56 लाख का जुर्माना

विदित हो कि श्री सिंह ने पूर्व में बोकारो थर्मल प्लांट का ऐश पौंड साल 2019 में टूटने एवं छाईयुक्त जल घरों में घुसने और दामोदर को प्रदूषित करने के खिलाफ एनजीटी में केस किया था। 2021 में इसका फैसला आया था और एनजीटी ने डीवीसी की बोकारो थर्मल इकाई को 2 करोड़ 89 लाख 56 हजार का जुर्माना लगाया था।

बोकारो में दिखेगा बीकानेर का नजारा !

कालीपूजा की तैयारियां जोरों पर, जगह-जगह होंगे आयोजन

संवाददाता

बोकारो : शहर में दो साल के कोरोना काल के बाद इस बार उत्साह के साथ जगह-जगह कालीपूजा मनाए जाने की तैयारियां चल रही हैं। इसी कड़ी में सेक्टर-4 मजदूर मैदान में इस साल काली पूजा पंडाल को बीकानेर के जगदंबा मंदिर का स्वरूप दिया जाएगा। महाकाली पूजा के संस्थापक सदस्य कृष्ण कुमार मुन्ना ने बताया कि फ्रेंड्स क्लब द्वारा पिछले 50 वर्षों से महाकाली पूजा की जाती है। 1972 में जहां अभी हर्षवर्धन प्लाजा अवस्थित है, वहीं पूजा प्रारंभ कराई गई थी। मार्केट कंपलेक्स बनने के पश्चात इस पूजा को मजदूर मैदान में किया जाने लगा। इस बार माता महाकाली की लगभग 12 फीट ऊंची भव्य प्रतिमा का निर्माण पुरूलिया के मंटू पाल व उत्तम बाउरी कर रहे हैं। पंडाल का निर्माण मां अंबे टेंट हाउस के हेड मिस्त्री करीम अंसारी कर रहे हैं। पंडाल को राजस्थान बीकानेर के जगदंबा मंदिर का स्वरूप तैयार किया जा रहा है। माता की पूजा कराने के लिए बनारस के धर्माचार्यों को आमंत्रित किया गया है। छह दिवसीय महाकाली महोत्सव का शुभारंभ 24 अक्टूबर के संध्या 6:00 बजे पंडाल उद्घाटन के साथ प्रारंभ होगा। रात्रि 11:00 बजे माता महाकाली की पूजा प्रारंभ होगी। पूजा कमेटी में अध्यक्ष प्रभात कुमार, उपाध्यक्ष सर्वश्री ए के दास, आरजी पांडे, अखिलेश सिंह, प्रमोद मिश्रा, महासचिव अरविंद राय, सचिव त्रिलोचन मिश्रा, बृजेश कुमार, संजीव कुमार, राजेश कुमार राय, कोषाध्यक्ष उपेन्द्र नारायण सिंह, संरक्षक प्रेमनाथ पांडे, अनूप आदि उपस्थित थे।

श्याम माई मंदिर में इस बार तीन दिवसीय होगा पूजनोत्सव

नगर के सेक्टर-2 स्थित श्यामा माई मंदिर में काली पूजनोत्सव के सफल आयोजन को लेकर एक बैठक आयोजित की गई। इसमें पूजा के वृहत आयोजन को लेकर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। मैथिली कला मंच काली पूजा ट्रस्ट के महामंत्री सुनील मोहन ठाकुर ने बताया कि इस बार सूर्य ग्रहण के कारण तीन दिनों तक काली पूजनोत्सव का आयोजन किया जाएगा। 24 अक्टूबर को पार्थिव शिवलिंग पूजन, हनुमत ध्वजदान, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं श्री काली पूजन के बाद 25 अक्टूबर को महाआरती एवं महाभोग वितरण, श्री महाकाली पूजन, महाप्रसाद वितरण का आयोजन होगा। जबकि, 26 अक्टूबर को मां काली पूजन के बाद कुंवारि-बटुक भोजन, हवन, महाप्रसाद वितरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन होंगे। 26 अक्टूबर को प्रसिद्ध कलाकार रचना झा, रामकृष्ण झा और प्रीति मिश्रा द्वारा गीत-संगीत की प्रस्तुति होगी। वहीं, मिथिला के प्रसिद्ध शहनाई वादक बिलट राम की रसन चौकी में सुरीली तान भी छिड़ेगी। बैठक में मिहिर कुमार झा राजू को सर्वसम्मति से पूजा संयोजक बनाया गया। मौके पर ट्रस्ट के अध्यक्ष केसी झा, संरक्षक लक्ष्मण झा, इंद्र कुमार झा, गोविंद कुमार झा, भुगुनंदन ठाकुर, अविनाश झा, हरिश्चंद्र झा, रोशन कुमार तरुण, मिहिर कुमार झा, मिहिर मोहन ठाकुर, जयराम झा उपस्थित आदि रहे।

दिवाली को रात 10 बजे के बाद पटाखे फोड़े, तो होगी कार्रवाई

एनजीटी व प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के निर्देशों का लोग करें पालन : डीसी

बोकारो : दिवाली पर रात 10 बजे के बाद पटाखे फोड़ना महंगा पड़ सकता है। भारतीय दंड विधान (आईपीसी) एवं प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण अधिनियम के तहत ऐसा करने पर कार्रवाई हो सकती है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के आदेश के अनुपालन में झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद द्वारा वायु (प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण) अधिनियम 1981 की धारा 31 (ए) के तहत महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। इसकी जानकारी देते हुए जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने इन दिशा-निर्देशों के अनुपालन हेतु खास तौर से निर्देश दिया है। शनिवार को आगामी त्योहारों को देखते हुए वायु प्रदूषण (ध्वनि समेत) पर नियंत्रण के लिए कई दिशा-निर्देश उन्होंने जारी किए। इनमें केवल वैसे पटाखों की बिक्री की जा सकेगी, जिनकी ध्वनि सीमा 125 डेसिबल (ए) से कम हो। दीपावली को पटाखे मात्र दो घंटे रात्रि 8:00 से 10:00 बजे तक ही चलाए जा सकेंगे। दीपावली एवं गुरु पर्व पर रात्रि 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा छठ पर्व में प्रातः 6:00 से 8:00 तक तथा क्रिसमस एवं नव वर्ष के दिन मध्य रात्रि 11:55 से मध्य रात्रि 12:30 तक पटाखे चलाए जा सकेंगे। डीसी ने चास एवं बेरमो अनुमंडल पदाधिकारी को अपने-अपने क्षेत्रों में इसे सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। कहा कि जो भी व्यक्ति इन निदेर्शों का उल्लंघन करता है, उन पर आईपीसी की धारा 188 तथा वायु (प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण) अधिनियम 1981 की धारा 37 एवं अन्य सुसंगत अधिनियमों के तहत विधिसम्मत कार्रवाई करें।

पहल बोकारो के बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक डॉ. प्रभाकर की अनूठी मुहिम

बाल-अधिकार को ले चला रहे सघन अभियान

संवाददाता

बोकारो : बोकारो के बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक डॉ. प्रभाकर कुमार विगत कई महीनों से बाल अधिकार संरक्षण को लेकर लगातार अभियानरत हैं। गांव-गांव, गलियों-गलियों तक पहुंचकर स्कूलों और झोपड़ियों तक पहुंचकर वह बालहित की रक्षा के लिए लोगों को जागरूक करने में लगे हैं। इसके तहत वह जेजे एक्ट 2015, पोक्सो 2012, पोक्सो रूल 2020, आरटीई एक्ट, कॉर्पोरेल पनिशमेंट के दायरे, बच्चों के अधिकार व कानून, बच्चों के सहायतार्थ 1098 नंबर, बच्चों के हितधारकों की सूची, हितधारक में पुलिस की भूमिका बाल अधिकारों के परिपेक्ष्य में, जिले में बढ़ती चाइल्ड एब्यूज की घटनाएं व उनके प्रकार, बाल मुद्दे, बाल विवाह, बाल

श्रम, बाल दुव्यार्पार, नशे सेवन में प्रवृत्त बच्चे, बाल मुद्दों पर, विद्यालय के मानकों, स्कूल प्रबधंन की भूमिका, बढ़ती बाल अपराध की घटनाएं व मनोवैज्ञानिक निजात आदि विषयों की विस्तारपूर्वक जानकारी देते हैं।

हाल के दिनों में उन्होंने प्रोजेक्ट बालिका विद्यालय, चास और मध्य विद्यालय, माराफारी में अपना अभियान चलाया। उन्होंने कहा कि वैसे संस्थान जहां बच्चे आते-जाते हैं, पढ़ते हैं रहते हैं, आवासीय व्यवस्था का लाभ लेते हैं चाहे वह स्कूल हो या कोई शेल्टर होम या कोई भी, वहां काम करने वाले सभी कर्मचारियों चाहे वो स्थायी, संविदा, तदर्थ, अंशकालीन जॉब पर ही क्यों न नियुक्त हों, पोक्सो रूल 2020 के तहत संस्थान के प्रबंधक को सभी कर्मचारियों का पुलिस सत्यापन रिपोर्ट एवं उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि की जांच रिपोर्ट आवश्यक है। इसका अनुपालन नहीं किया जाना पोक्सो रूल 2020 का उल्लंघन है। उन्होंने कहा कि इन विषयों पर जागरूकता ही बचाव है। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान वह बच्चों से बतलाये गये विषयक से संदर्भित प्रश्न पूछते हैं, सहभागिता से उनका मनोबल बढ़ाते हैं और पुरस्कार देकर प्रोत्साहित भी।

बाल-विवाह मुक्त भारत अभियान भी चला रहे

डॉ. प्रभाकर बाल विवाह मुक्ति को लेकर भी खास तौर से अभियान चला रहे हैं। जयपाल नगर बस्ती, बोकारो के बच्चों संग महिलाओं ने बालविवाह मुक्त भारत अभियान को मूर्त रूप बनाने हेतु नोबल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के देशव्यापी आह्वान पर सार्वजनिक रूप से एकत्रित होकर बाल विवाह के खिलाफ अपनी एकजुटता का परिचय दिया।

हफ्ते की हलचल

सही से हाथ धोकर बीमारियों से बचाव संभव : अमरदीप

बोकारो : विश्व हैंड वाशिंग डे के अवसर पर रोटरी चास की ओर से मिडिल स्कूल माराफारी, बांसगोड़ा में स्टेनलेस -स्टील का हैंडवाश स्टेशन लगाया गया। रोटरी चास के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने कहा कि स्कूली बच्चों को अपने हाथ स्वच्छ रखकर विभिन्न प्रकार के संक्रमण से बचाव करने के उद्देश्य से रोटरी चास द्वारा यह हैंड वॉश स्टेशन लगवाया गया है। कार्यक्रम के संयोजक कुमार अमरदीप ने उपस्थित बच्चों को हाथ धोने के फायदे बताते हुए कहा कि साबुन लगाकर सही ढंग से हाथ धोना चाहिए, जिससे बीमारियां दूर रहें। कुमार अमरदीप ने बच्चों से हाथ बुलवाकर उन्हें हाथ धोने का सही तरीका और कब-कब हाथ धोना चाहिए भी बताया। रोटरी चास की सचिव पूजा बैद ने कहा कि स्थापित किए गए इस हैंडवाश स्टेशन से स्कूल के लगभग 850 बच्चों एवं शिक्षकों को सीधा लाभ पहुंचेगा। रोटरी चास द्वारा स्वच्छता के प्रति बच्चों के बीच जागरूकता कार्यक्रम आगे भी किए जाते रहेंगे। मौके पर रोटरी चास के पूर्व अध्यक्ष बिपिन सिंह व विपिन अग्रवाल सहित स्कूल के प्रधानाचार्य मनोज झा, बिपिन बिहारी प्रसाद, डॉ. संगीता पाठक, किरण कुमारी, गौतम कुमार, दीपक कुमार माहथा, लक्ष्मण सिंह, मुकेश कुमार, शिव शंकर माहथा, सरिता कुमारी, दुलारी पन्ना, मधुरानी, कृष्णानंद शर्मा, सुनीता कुमारी, मंजू कुमारी सहित कई शिक्षक उपस्थित थे।

नेशनल गेम्स में स्वर्ण पानेवाले गोल्डी हुए सम्मानित

बोकारो : नेशनल गेम्स में इस बार तीरंदाजी में झारखंड का पहला स्वर्ण पदक दिलाने वाले बोकारो के गोल्डन बॉय गोल्डी मिश्रा को ब्रज उत्थबाला ट्रस्ट, जोधाडीह मोड़ द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही उनके माता पिता दुलाल मिश्रा और रेखा देवी को भी माला और शॉल ओढाकर सम्मानित किया गया। मौके पर मैनेजिंग ट्रस्टी सुखेंदु शेखर पाठक ने 21000 की पारितोषित राशि देते हुए कहा कि गोल्डी ने बोकारो के साथ साथ समाज का भी नाम रोशन किया है। उन्होंने गोल्डी के उज्वल भविष्य की कामना की। मौके पर ट्रस्ट के सदस्य मंतोष पाठक, राकेश मिश्रा के साथ-साथ चम्पा देवी पाठक, अधीर चंद्र झा, भवतरण झा, विश्वजीत झा, राजीव रंजन झा, रोबिन झा, सत्यनारायण पाठक आदि मौजूद रहे।

गोमिया में सुहागिनों ने धूमधाम से मनाया करवा चौथ

गोमिया : हजारी, स्वांग कोलियरी, पालिहारी गुरुडीह, ससबेड़ा सहित विभिन्न क्षेत्रों के सुहागिनों ने धूमधाम से मनाया। उन्होंने करवा चौथ का निर्जला व्रत रखकर अपने सुहाग की लंबी आयु के लिए प्रार्थना की। स्टेशन रोड स्थित सरदार बलबीर सिंह के आवास पर महिलाओं ने एकत्रित होकर करवा चौथ व्रत की पूजा की। यहां विद्या कुमारी ने करवाचौथ की कथा महिलाओ को सुनाई तथा उन्होंने महिलाओं को करवा चौथ की पूजा के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सुहागिनों के लिए यह पावन खास होता है। इस दिन पूरे दिन निर्जला व्रत रखकर सुहागिनें अपने पति की लंबी आयु की कामना करती है तथा शाम को चांद देखकर अपना व्रत तोड़ती हैं। इस अवसर पर परमजीत कौर सलूजा, रेशु खनूजा, पिंकी खनूजा ,कृति खनूजा, गुरु चरण कौर सलूजा, सुनीता, रिंकी, पूजा शर्मा, अवंतिका, तन्नू पूजा विश्वकर्मा, आशा कुमारी, रेखा सिंह, देवी, लवली, गीता यादव, प्रीति लाल, रानी शिल्पी सहित अन्य महिलाएं उपस्थित थीं।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में लगा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

बोकारो : बेरमो अवध बिहारी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर जरीडीह बाजार में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसमें संजीव नेत्रालय की नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ दीपिका सिंह व उनकी टीम के द्वारा लगभग 300 लोगों की निःशुल्क नेत्र जांच की गई। इस कार्यक्रम का उद्घाटन सीसीएल सीएसआर के निखिल अखौरी, समाजसेवी सह विद्यालय के सचिव अनिल अग्रवाल एवं प्रधानाचार्य कवलजीत सिंह ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। डॉ. दीपिका ने बताया कि इस कैंप में विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं के अलावा अन्य लोगों की भी जांच की गई है। जिन बच्चों की आंखों में समस्या आई है, उनका संजीवनी नेत्रालय बारी को-ऑपरेटिव बोकारो में निःशुल्क इलाज किया जाएगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में निरल कुमार, अर्पिता चंद, मणिदीपा कुंडू, अमित चक्रवर्ती, सुरेश लाल, सुभाष चंद्र झा, रुबीना, काजल मंडल, शकुंतला, रीता, धीरज कुमार, सुमित श्रीवास्तव, अरुण कुमार, श्वेता, पिंकी सिंह, दीक्षा, खुशबू आदि का अहम योगदान रहा।

'झारखंड सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को किया गुमराह'

गोमिया विधायक ने लगाया आरोप, कहा- नगर निकाय चुनाव में आरक्षण खत्म कर ओबीसी की हुई हकमारी

संवाददाता

बोकारो : गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो ने राज्य की हेमंत सोरेन सरकार पर ओबीसी के हक व अधिकार को कुचलने और गला घोंटने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की मंशा पूरी तरह से ओबीसी विरोधी है और यह राज्य में ओबीसी को आरक्षण दिये बगैर नगर निकाय चुनाव कराने संबंधी कैबिनेट के निर्णय से स्पष्ट भी हो गया है। उन्होंने कहा कि एक तरफ सरकार ओबीसी को आरक्षण देने का ढोंग रच रही है, वहीं पहले से दिए गए आरक्षण को छीनने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि ओबीसी के लोगों को यह याद रखना चाहिए कि इस राज्य सरकार ने इसी साल हुए पंचायत चुनाव में ओबीसी के लिए पहले से आरक्षित करीब साढ़े दस हजार पद को सामान्य कर दिया और अब सरकार नगर निकाय चुनाव में भी ओबीसी के हक को मारने के कुत्सित प्रयास में लगी है।

उन्होंने कहा कि हम सबको यह याद रखना चाहिए कि गिरिडीह के सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने पंचायत चुनाव के पूर्व सर्वोच्च न्यायालय में ओबीसी आरक्षण लागू करने के संबंध में जनहित याचिका दायर की थी। तब झारखंड सरकार के द्वारा सर्वोच्च न्यायालय को बताया गया था कि चूंकि चुनाव की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है इसलिए सरकार आगे होने वाले चुनाव से पूर्व ओबीसी आरक्षण से संबंधित ट्रिपल टेस्ट की प्रक्रिया को पूर्ण कर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ओबीसी आरक्षण के संदर्भ में दिए गए दिशा निर्देश का अनुपालन करने हेतु कटिबद्ध है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि झारखंड सरकार द्वारा ओबीसी आरक्षण के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय को भी गुमराह किया गया है।

उन्होंने कहा कि यह सरकार लोगों को ठगने व गुमराह करने का काम कर रही है। इसका ताजा ताजा-तरीन उदाहरण यह है भी है कि गत 14 सितंबर को हुई कैबिनेट की बैठक में 1932 के खतियान के आधार पर स्थानीय नीति बनाने और ओबीसी को आरक्षण देने का निर्णय लिया गया, मगर अब तक इसको लेकर राज्य सरकार की ओर से संकल्प तक जारी नहीं किया गया है।

डॉ. महतो ने कांग्रेस विधायक अंबा प्रसाद पर टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने दिखावे के लिए विधानसभा में ओबीसी को आरक्षण देकर निकाय चुनाव कराने की मांग सरकार से की थी। आज जब सरकार ने बिना ओबीसी आरक्षण के नगर निकाय चुनाव कराने का निर्णय ले लिया तब अंबा प्रसाद चुप हैं। कांग्रेस सहित अन्य दल भी चुप्पी साधे हुए है।

सावधान! इंडेन गैस कनेक्शन के नाम पर साइबर ठग कर रहें हैं मोबाइल पर कॉल

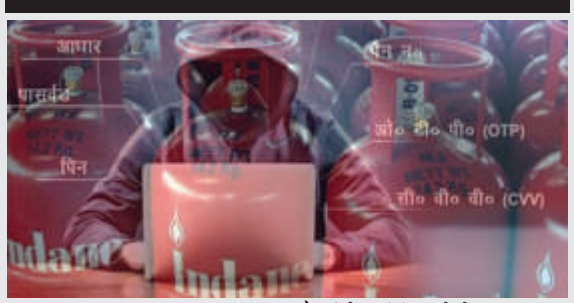

कुमार संजय

बोकारो थर्मल : साइबर ठगों के द्वारा लोगों को ठगने के रोज नये तरीके इजाद किये जा रहें हैं। बैंकों के एटीएम को बंद करने को लेकर कई लोगों को ठगी का शिकार बनाया गया। वर्तमान में साइबर ठगों के द्वारा लोगों के मोबाइल पर इंडेन गैस कनेक्शन के नाम पर कॉल करके मोबाइल होल्डर का नाम लेकर उनसे इंडेन गैस कनेक्शन का ई-केवाईसी करवाने की बात कहते हैं। मोबाइल पर कॉल करने वाला गैस कनेक्शन का ई-केवाईसी नहीं कराने की स्थिति में कनेक्शन एक माह के दरम्यान बंद कर देने की बात कहकर डराने का काम करते हैं। ई-केवाईसी करने के लिए कॉल करने वाला गैस कनेक्शन धारक से सारा डिटेल्स लेकर आधार नंबर की मांग करता है और बाद में आपके मोबाइल पर आये ओटीपी की मांग करता है।

ओटीपी शेयर करने की स्थिति में बैंक एकाउंट से रुपया ट्रांसफर कर लेते हैं। एसएलएस इंडेन गैस एजेंसी गोमिया के विजय कुमार का इस संबंध में कहना था कि हाल के दिनों में गैस कनेक्शन का ई-केवाईसी करवाने के नाम पर काफी ठगी का मामला प्रकाश में आया है। कहा कि इंडेन गैस कंपनी कभी भी ग्राहकों से ई-केवाईसी करने की मांग नहीं करती है।

दरभंगा में जेब पर भारी 'उड़ान'

दरभंगा : दरभंगा एयरपोर्ट से हवाई सफर करने वाले लोगों को 'उड़ान' (उड़ेगा देश का आम नागरिक) योजना का लाभ नहीं मिल रहा हैं। बढ़ते हवाई किराए ने यात्रियों के सफर को बोझिल बना दिया है। यात्रियों में इसको लेकर आक्रोश है। मालूम हो कि दरभंगा एयरपोर्ट से दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु रूट पर सबसे अधिक यात्रियों की भीड़ होती है। भीड़ को लेकर एयरलाइंस ने इस रूट पर दो-दो विमानों के परिचालन की सुविधा बहाल की थी, लेकिन फिलहाल इस रूट पर एक ही विमान का संचालन किया जा रहा है, जिससे यात्रियों का दवाब बढ़ने के साथ टिकटों का दाम आसमान छूने लगा है। अब तक जहां आने-जाने को 16 फ़्लाइट की सेवा उपलब्ध थी, वह सिमटकर अब 8 से 10 तक ही रह गई है। पिछले साल दिल्ली से दरभंगा का किराया 17 हजार तक सर्वाधिक था। इस बार मुंबई और हैदराबाद से दरभंगा का किराया 29 हजार रुपए को पार कर गया। हैदराबाद से दरभंगा का टिकट 29455 रु., दिल्ली से दरभंगा का 20156 और बेंगलुरु से दरभंगा का किराया 17326 रु. है। ऐसे में यात्री दरभंगा के बजाय पटना को तरजीह देने लगे हैं। लोगों का कहना है कि अगर यहां यही स्थिति रही तो फ्लाइट बंद करने की स्थिति आ सकती है।

लापरवाही का नतीजा लाइन हाजिर

मधुबनी : जिले में अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाही बरतने वाले पुलिसकर्मियों की इन दिनों खैर नहीं। पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार इस मसले पर काफी गंभीर हैं। हाल ही में उन्होंने विधि-व्यवस्था बनाए रखने, अपराध नियंत्रण, कार्यहित, प्रशासनिक दृष्टिकोण एवं लोकहित में लापरवाही की बार-बार मिल रही शिकायत पर साहरघाट थानाध्यक्ष विजय पासवान को लाइन हाजिर कर दिया। उनकी जगह पर अंधरामठ थानाध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार का साहरघाट थानाध्यक्ष के पद पर तबादला किया गया है। विजय पासवान के स्थानांतरण से थाना क्षेत्र के हर तबके के लोगों में खुशी देखी जा रही है।

झारखंड के स्पाइन विशेषज्ञ डॉ. राजेंद्र हाजरा का नाम गिनीज बुक में शामिल

बेस्ट वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट ऑफ द ईयर 2022 का मिला प्रतिष्ठित पुरस्कार

विशेष संवाददाता

रांची : स्पाइन चिकित्सा के क्षेत्र में झारखंड को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने वाले डॉ. राजेंद्र कुमार हाजरा की उपलब्धियों में एक और नई और सबसे महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ गई है। डॉ. हाजरा का नाम अब गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल हो चुका है। उन्होंने बताया कि उन्हें गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड अवॉर्ड्स 2022 के तहत प्रतिभागिता प्रमाणपत्र से नवाजा गया है। उनको 'बेस्ट वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाइन स्पेशलिस्ट ऑफ द ईयर 2022' का खिताब गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से प्रदान किया गया। 15 अक्टूबर को उनका नाम इस श्रेणी में शामिल हुआ। डॉ. हाजरा ने इस उपलब्धि के लिए अपने परमपूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली, अपने माता-पिता और मरीजों के साथ-साथ सभी मित्रों के सहयोग को दिया है।

इसके पूर्व अपने जीवन को पूर्ण रूप से एकमात्र एक्यूपंक्चर चिकित्सा में समर्पित कर गंभीर से गंभीर स्पाइन (मेरूदंड) के मरीजों की सेवा में लगे रहे और अब केवल झारखंड एवं देश ही नहीं, बल्कि विश्व में अपनी पहचान बनाने वाले प्रख्यात एक्यूपंक्चर चिकित्सक डॉ. हाजरा का नाम वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड में शामिल किया गया था। डॉ. हाजरा विश्व के एक्यूपंक्चर साइंस के ऐसे पहले चिकित्सक हैं, जो इस पद्धति से एकमात्र स्पाइन से संबंधित रोगों की चिकित्सा करते हैं। देश के साथ-साथ विदेशों के मरीज भी इनसे चिकित्सा सेवा लेते हैं। डॉ. हाजरा अभी तक लगभग 450 से भी अधिक राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किए गए हैं। साथ ही इन्हें ऑनरारी कॉज के लिए तीन-तीन बार मानद पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। 12 फरवरी 2022 को द अमेरिकन यूनिवर्सिटी यूएसए ने मानद पीएचडी इन एक्यूपंक्चर साइंस प्रदान किया है, जो द अमेरिकन यूनिवर्सिटी (यूएसए) द्वारा भारत में पहली बार किसी एक्यूपंक्चर चिकित्सक को दिया गया है। डॉ. हाजरा वर्तमान में कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के सदस्य हैं। देश-विदेश के चिकित्सक इनसे एक्यूपंक्चर साइंस की प्रशिक्षण लेने आते हैं। साथ ही डॉ. हाजरा, महात्मा गांधी ग्लोबल पीस यूनिवर्सिटी के मानद प्रोफेसर हैं।

इतना ही नहीं, प्रतिष्ठित एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र कुमार हाजरा को विश्व के सबसे बड़े आयुष चिकित्सकों के संगठन इंटरनेशनल आयुष मेडिकल एसोसिएशन (आईमा) का इंटरनेशनल वाइस प्रेसिडेंट भी उन्हें बनाया है। वर्तमान में डॉ हाजरा इंटरनेशनल आयुष मेडिकल एसोसिएशन के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं। डॉ नितिन राजे पाटिल, वॉईस चेयरमैन इंटरनेशनल ने इनके नाम का अनुमोदन कर सर्वसम्मति से इन्हें इस पद पर नियुक्त किया है। डॉ हाजरा इंटरनेशनल आयुष मेडिकल एसोसिएशन के साथ विश्व में एक्यूपंक्चर के विकास हेतु प्रतिबद्ध हैं। इन्हें वर्ष 1997 में जैक के उपाध्यक्ष सांसद सूरज मंडल के हाथों 'एक्यूपंक्चर भीष्म सम्मान' से सम्मानित किया गया था। इसके साथ ही ये अनगिनत सम्मान से सम्मानित होते रहे हैं।

आओ चलें अंधकार से प्रकाश की ओर

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

बृहदारण्यक उपनिषद् में उपनिषद्कार मनुष्य मात्र को आज्ञा दे रहे हैं कि वह अपने जीवन में प्रत्येक परिस्थिति में इन तीन सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लें-

ॐ असतो मा सदगमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

असत्य कितना भी खुद को सजा-संवार ले, वह सत्य की शक्ति के आगे बौना रहता है। अंधकार का अस्तित्व उसी समय तक है, जब तक दीपक नहीं जलाया जाए और मृत्यु का भय उस समय समाप्त हो जाता है, जब हम अमृत्व की शरण में चले जाते हैं।

इसलिए हे परमात्मा! हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिए।
इन तीनों उपदेशों को जीवन में क्रियान्वित करने की रात्रि दीपावली है। दिवाली मन और तन के बीच भेद समाप्त करने की रात्रि है। कर्म और फल के बीच अंतर समाप्त करने वाला उपक्रम है। उजाले और अंधेरे का भेद मिटाने का उपक्रम है।

पूजा में दीप हर दिन प्रज्वलित किया जाता है, विशेष मौकों पर अखण्ड दीप जलाया जाता है, पंचमुखी दीप जलाया जाता है। परंतु कार्तिक महीने की अमावस्या को सिर्फ दीपावली ऐसी रात्रि है, जिस दिन हम सब अपने घर-आंगन में दीप जलाते हैं। कई दिनों से दीपावली की तैयारी में पूरे घर की साफ-सफाई की जाती है और दीपावली के दिन सारा घर नए वस्त्र, आभूषण पहनकर मां लक्ष्मी और गणपति का पूजन करता है, उनका स्वागत करता है, उन्हें अपने जीवन में निमंत्रित करता है।

पूरे विश्व में दिवाली की तरह अलग-अलग मौकों पर प्रकाश पर्व मनाने की परंपरा है। अंग्रेज क्रिसमस एवं नए साल पर घर को रोशनी से सजाते हैं। सिक्खों में गुरु नानक देव जी के जन्मदिवस को प्रकाश पर्व कहा जाता है।

खुशी को दर्शाने के लिए प्रकाश से बेहतर कोई माध्यम नहीं है। मन उदास हो तो भी रोशनी कर देने पर मन खुश हो जाता है, क्योंकि अंधेरा असत्य को निरूपित करता है।

शायद यही कारण है कि दीपावली की शुरूआत से जुड़ी हुई जितनी भी कहानियां हैं, उन सभी में अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना की गई है। मान्यता है कि श्री राम जब लंका विजय करके वापस अयोध्या लौटे, उस दिन अयोध्या की प्रजा ने दीपक जलाकर उनका स्वागत किया था।

कई स्थानों पर यह भी उल्लेख आया है कि पांडव जब वनवास से वापस लौटे थे, तब उनका स्वागत करने के लिए दीप जलाए गए थे। यह भी माना गया है कि भगवान श्रीकृष्ण जब नरकासुर को हराकर वापस द्वारका लौटे तो सत्यभामा सहित उनका स्वागत दीप जलाकर हुआ था।

कई धार्मिक ग्रंथों में वर्णित है कि जिस दिन भगवान नृसिंह ने हिरण्यकश्यप का वध किया था, उस रात दीपावली मनाई गई थी। दीपावली से जुड़ी यह सभी पौराणिक कथाएं हमारे अंतर्मन में छुपी भावनाएं- अधर्म का नाश हो, धर्म की स्थापना हो तथा प्राणियों में सद्भावना हो, को रेखांकित करती है।

अंधकार व धर्म पर्यायवाची

श्री राम लंका विजय करके लौटे तो अंधकार पर विजय स्थापित की। अंधकार एवं धर्म पर्यायवाची हैं। इसलिए कृष्ण भी जब नरकासुर का वध करके वापस आए, तो प्रकाशोत्सव मनाया गया। परंतु महाभारत युद्ध खत्म होने के बाद ऐसा कोई उत्सव नहीं मनाया गया, क्योंकि महाभारत में हर किरदार धूस्सर (ग्रे) है, वहां अंधकार-प्रकाश, सफेद-काले जैसा कोई भेद नहीं है। इस युद्ध में विजयी पक्ष युधिष्ठिर के मन का विषाद अति भयंकर है। आखिर ऐसा द्वंद्व क्यों है?

युद्ध तो कोई भी हारने के लिए नहीं करता है। ना श्रीराम ने किया, ना श्रीकृष्ण ने किया, ना युधिष्ठिर ने किया और युद्ध पौरुष, बल कौशल से नहीं जीता जाता है। युद्ध कूटनीति से जीता जाता है।

युद्ध रणनीति से, छल-बल से, कपट, झूठ से, इसे स्ट्रेटजी कह सकते हैं, पर हैं रणनीति के अंग। युद्ध में सब जायज है, क्योंकि युद्ध का उद्देश्य विजय है। फिर महाभारत खत्म होने के बाद युधिष्ठिर को विषाद क्यों है? उनके मन में अंधेरा क्यों है और श्री कृष्ण इतना बड़ा महाभारत विना शस्त्र उठाए, सिर्फ रणनीतिकार बनकर जीत जाते हैं। फिर उनकी द्वारका भी महाभारत के 30-40 साल बाद क्यों मिट जाती है?

ॐ असतो मा सदगमय।

जहां असत्य बलवान होगा, वहां प्रकाश कम्पित होता है।
प्रकाश अर्थात परमात्मा, प्रकाश अर्थात आदित्य, प्रकाश अर्थात हिरण्यमय।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्
तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।
-ईशावास्योपनिषद

जब ईशावास्योपनिषद कहता है कि सत्य का मुख्य स्वर्ण से ढंका है तो वह हृदय में तरंगित हो रही अनेक कामनाओं की ओर इशारा कर रहा है, जिन्हें पूरा करने के लिए मनुष्य चोरी, डाका, झूठ, कालाबाजारी, उधार जैसे पाप करता है। परंतु सच्चाई यही है कि इन कामनाओं की भीड़ या रिश्तों के बीच में हर व्यक्ति अकेला है। उसका साथी सिर्फ उसकी आत्मा है। जब तक वह उस आत्मा को प्रगाढ़ आलिंगन में नहीं बांधता है, वह सब कुछ मिल जाने के बाद भी युधिष्ठिर की भांति उदास रहता है।

सवाल बहुत सीधा सा है- इस जीवन में पराजय या समझौता कोई नहीं चाहता है। जीत के लिए हर कीमत कम होती है। एक विश्व प्रपंच (तेरा- मेरा, इसका-उसका) में हम सब उलझे हुए हैं, धंस गए हैं। इससे बाहर निकला नहीं जा सकता है और इसमें रहने का मतलब है कि हम अपने हृदय के स्वर को, सत्य की आवाज को अनसुना कर देते हैं। श्रीकृष्ण ने भी किया, नहीं तो 'अश्वत्थामा सत्य' कैसे कह दिया? झूठ-सच के लिए चढ़ाया गया आधा सच, जो झूठ से भी खतरनाक है, अपने अनुसार तोड़ा और मरोड़ा हुआ है।

दीपावली सत्य की रात है-

अमृत मंथन से लक्ष्मी का उद्भव हुआ है। क्षीर सागर मथा गया था, लक्ष्मी को पुनः प्राप्त करने के लिए, जो दुर्वासा के इंद्र को शाप के कारण समुद्र में चली गई थीं। क्या कारण है कि 'श्री' जब भी रुष्ट होती हैं, जमीन के अंदर चली जाती हैं?
जमीन के अंदर के स्थान को पाताल कहा गया है असुरों का स्थान, सीता भी वहीं जाती हैं और लक्ष्मी भी। परंतु दुर्वासा या अन्य ऋषि शाप देने में इतने तत्पर क्यों होते हैं? जो धर्म सभी को दया, सहिष्णुता, क्षमाशीलता का उपदेश देते नहीं थकता है, उसका पाठ्यक्रम इन विषयों पर लागू क्यों नहीं होता? क्यों कमंडल में शाप लेकर चलना ऋषियों की आदत है? यह आदत धर्म आचरण के अनुकूल नहीं लगता है।

मृत्योर्मा अमृतं गमय

दीपावली के दिन अनगिनत मिट्टी के दीपों में, हालांकि आजकल बिजली के बल्ब चाइनीज वाले जला दिए जाते हैं, उसमें यह रूपक बिल्कुल चरितार्थ हो जाता है।

मिट्टी मृत्यु का प्रतीक है- शरीर और उसे अमृत की ओर ले जाना है। इस शरीर में अमृत हमेशा आत्मा है। उसी के प्रकाश से यह शरीर चमकता है, उसी की अनुभूति सुषुप्ति में होती है।
आत्मसुख से मुंह मोड़ना नहीं है। अगर जोर-जबरदस्ती करके मन को सुख से दूर कर दिया जाए तो कमंडल में ऋषि की भांति सिवाय शाप के क्या शेष बचेगा?

खुशी, मिठाई, शोर-शराबा और धूमधाम से मनाई गई दीपावली का त्यौहार त्याग को निरूपित नहीं करता है, बल्कि आनन्द अमृत का प्रतीक है। मिट्टी का दीपक अपनी आभा को चारों ओर प्रकाशित करता है। इस प्रकाश में ही आत्म-ज्योति, उत्थान का मार्ग है। मनुष्य आजीवन ज्ञान चक्षु मूंदकर अंधेरे में भटकता रहता है। फिर आते हैं गुरु, जो ज्ञान चक्षु खोल देते हैं।

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानंजन शलाकया
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।

दुर्वासा के शाप में क्रोध का जबरदस्त समावेश है, जबकि अगस्त्य के तप में सहिष्णुता का समावेश है। वास्तव में क्रोध का अर्थ अधूरापन है, अज्ञान है। जमीन के अंदर भी अंधकार होता है, वहां सूर्य प्रकाश प्रवेश नहीं करता है। इसलिए सीता, लक्ष्मी जब रुष्ट होती हैं, अंधकार में निवास करती हैं। अंधकार शाश्वत है। प्रकाश को संघर्ष करना पड़ता है। सूरज का श्रम देखिए, रोज निकलता है। राक्षस भी पाताल में इसलिए रहते हैं।

पाताल भोग की अवस्था है, अधिकार की, सिर्फ अपने लिए जिसे सुख चाहिए, वह पाताल निवासी है। अमृत सुखों को बांटना है- गण राज्य है- जनसंघ है- गणपति की अवस्था है।

दीपावली में मिट्टी का एक दीपक जब दूसरे दीप को जलाता है तो वह सुख, भोग की भागीदारी को निरूपित करता है। यह स्वर्ग है, पर इंद्र के स्वर्ग जैसा बंजर नहीं, जहां न कुछ उपजता है, न खत्म होता है, बल्कि जागृत एवं स्पंदित स्वर्ग। दीपक बुझता भी है, जो तन के बुझने का प्रतीक है- मगर उसके पहले उसकी लौ दूसरे दीपक को जला देती है।

शरीर के साथ यही हो रहा है आदिकाल से, वह अपना रूप बदल रहा है, पर उसके अंदर अवस्थित आत्मा शाश्वत है, उसके प्रकाश को पूर्णतया अनुभव करने की रात्रि दीपावली है। अमावस्या के घोरतम अंधकार में मिट्टी के एक अदने से दीए का प्रकाश धर्म के सभी मूलभूत तत्वों, जैसे- दया, श्रद्धा, दान के तेल को समाहित किए हुए है और उसकी रोशनी में सत्य, धर्म शक्ति पाते हैं। मृत्यु हार जाती है, क्योंकि आत्मा का स्वर उस पर विजयी होता है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

इंटरपोल- कल्पना को मात देती वास्तविकता

अभिव्यक्ति

- जुर्गन स्टॉक -
महासचिव, इंटरपोल

चोरी के पासपोर्ट के इस्तेमाल के जरिये सीमा पार करने का प्रयास करते हुए एक आतंकवादी को गिरफ्तार किया गया। ऑनलाइन पोस्ट की गई तस्वीरों के माध्यम से पहचाने जाने के बाद एक बाल-शोषण पीड़ित को बचाया गया। दुनिया भर में पीड़ितों को लक्षित करने वाले फिशिंग घोटाले से जुड़ी लाखों डॉलर की चोरी पकड़ी गयी। यह किसी ब्लॉकबस्टर फिल्म की कहानी नहीं, बल्कि अपने 195 सदस्य देशों का समर्थन करने वाले इंटरपोल का रोजमर्रा का काम है। आज हम जिन खतरों का सामना कर रहे हैं, वे तेज, गतिशील, अपने-आप में सशक्त और परस्पर जुड़े हुए हैं। वास्तव में, हम आपराधिक खतरे से सम्बंधित परिदृश्य में अभूतपूर्व जटिलता देख रहे हैं।

इन वैश्विक खतरों से निपटने के लिए, इंटरपोल की गतिविधियां मुख्य रूप से तीन कार्यक्रमों पर आधारित हैं- आतंकवाद, साइबर अपराध और संगठित एवं उभरते अपराध, जो हमारे सदस्यों की कानून-व्यवस्था को बनाये रखने से जुड़ी चिंताओं को भी दर्शाती हैं।

दुनियाभर में आपराधिक गतिविधियों के बढ़ते समन्वय के जवाब में, इस साल की शुरूआत में इंटरपोल ने अपना वित्तीय अपराध और भ्रष्टाचार विरोधी केंद्र स्थापित किया। विश्व स्तर पर, अवैध वित्तीय लेन-देन के एक प्रतिशत से भी कम को रोकने और वसूली करने में सफलता मिलती है तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था इसके बढ़ते दबाव का सामना कर रही है। ऐसे में विस्तारित कार्रवाई के लिए एक प्रमुख क्षेत्र है- आपराधिक संपत्तियों का पता लगाना, उन पर कब्जा करना और उन्हें जब्त करना।

इंटरपोल की स्थापना, क्षेत्रीय और वैश्विक पुलिस समन्वय की अत्यधिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए, 1923 में की गई थी। लगभग एक सदी बाद भी,

यह आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है, क्योंकि आपराधिक परिदृश्य लगातार तेज गति से उभर रहा है। सीमा पार से सूचना के आदान-प्रदान के लिए मानदंड स्थापित करने संबंधी अभूतपूर्व पहल, अब मानक का दर्जा प्राप्त कर चुकी है।

उस समय टेलीग्राम, टेलीफोन और डाक सेवाओं ने कानून प्रवर्तन सहयोग की सीमाओं का निर्धारण किया था। आज, एक बटन के क्लिक के साथ, दुनिया में कहीं भी, पुलिस तुरंत इंटरपोल के 19 वैश्विक डेटाबेस के आधार पर जांच कर सकती है, जिनमें डीएनए प्रोफाइल और चेहरे की पहचान के लिए फोटो सहित 126 मिलियन रिकॉर्ड हैं। हमारे डेटाबेस का हर दिन 20 मिलियन से अधिक बार खोज के लिए उपयोग किया जाता है- जो प्रति सेकंड लगभग 250 उपयोग के बराबर है।

अपने स्वभाव के अनुरूप, कानून प्रवर्तन परंपरागत रूप से प्रतिक्रियाशील होता है। हालांकि, जैसे-जैसे हम पुलिस सहयोग की एक नई सदी की शुरुआत कर रहे हैं, वैश्विक कानून प्रवर्तन समुदायों द्वारा अपनी प्रणालियों को भविष्य के प्रति सुरक्षित बनाने के लिए ठोस कदम उठाये जा रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय कानून प्रवर्तन सहयोग के सक्रिय एजेंट होने के लिए तकनीकी प्रगति को पुलिस के काम में शामिल किया जाना चाहिए। हालांकि, वैश्विक सुरक्षा के लिए मानवीय संबंध भी आवश्यक है- कोई भी मशीन आपस-में हाथ मिलाने की जगह नहीं ले सकती। कोई भी डेटाबेस किसी संवाद को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। यही कारण है कि हमारी महासभा का आयोजन, इंटरपोल के मिशन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है- एक सुरक्षित विश्व के लिए पुलिस को परस्पर जोड़ना।

दुनिया भर के पुलिस के अग्रणी लोग इंटरपोल के अनूठे मंच के माध्यम से वैश्विक सुरक्षा के मुद्दों का समाधान करने के लिए आपस में विचार-विमर्श करेंगे। वे सुरक्षा और गोपनीयता के बीच संतुलन सुनिश्चित करने वाले फ्रेमवर्क की आवश्यकता सहित एक नए तकनीकी परिदृश्य को अपनाने में सीखे गए सर्वोत्तम तौर-तरीकों को साझा करेंगे।

इंटरपोल के माध्यम से वैश्विक सहयोग, राष्ट्रीय स्तर पर वास्तविक परिणाम कैसे लाता है, इसका एक उदाहरण हाल ही में मादक पदार्थों की तस्करी को लक्षित ऑपरेशन लायनफिश में भारत की भागीदारी है। भारतीय अधिकारियों ने ऑपरेशन के दौरान हेरोइन की सबसे बड़ी खेप को पकड़ा, जिसमें मुंद्रा बंदरगाह में 75.3 किलोग्राम नशीली दवा को जब्त किया गया था।

इसके बाद ऑपरेशन 'गरुड़' सफल हुआ, जहां केंद्रीय जांच ब्यूरो ने इंटरपोल और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के साथ निकट समन्वय में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैले ड्रग कार्टेल को लक्षित करते हुए कार्रवाई की, जिसके परिणामस्वरूप देश भर में 175 गिरफ्तारियां हुईं और 127 मामले दर्ज किए गए।

इंटरपोल के माध्यम से सहयोग के महत्व का एक अन्य उदाहरण हमारा अंतर्राष्ट्रीय बाल यौन शोषण (आईसीएसई) डेटाबेस है। आईसीएसई डेटाबेस में बाल यौन शोषण से जुड़ी चार मिलियन से अधिक तस्वीरें, वीडियो और हैश मौजूद हैं, जो प्रतिदिन औसतन सात बाल शोषण पीड़ितों की पहचान करने में मदद करते हैं। आज तक, डेटाबेस ने दुनिया भर में 30,000 से अधिक पीड़ितों की पहचान करने में सहायता की है।

इस वर्ष की शुरुआत में भारत इस विशेष डेटाबेस से जुड़ने वाला 68वां देश बन गया और वह समाज के सबसे कमजोर सदस्यों की सुरक्षा के लिए समर्पित इस वैश्विक नेटवर्क का हिस्सा बनने के महत्वपूर्ण परिणाम पहले ही देख चुका है।

निश्चित रूप से, लगभग 100 साल पहले इंटरपोल के निर्माण के पीछे का एक मौलिक कारण, आज भी हमारे काम में सबसे महत्वपूर्ण है- भगोड़ों को न्यायालय के समक्ष पेश करने में दुनिया के देशों की मदद करना, चाहे वे कहीं भी छिपने का प्रयास करें और चाहे वे कितनी भी दूर तक भागने की कोशिश करें।

हर साल इंटरपोल रेड नोटिस, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वॉन्टेड भगोड़ों के बारे में दुनिया भर में पुलिस को सचेत करते हैं, जिनसे विभिन्न देशों को हजारों हत्यारों, दुष्कर्म के अपराधियों, आतंकवादियों, धोखेबाजों और अन्य अपराधियों की पहचान करने तथा उन्हें गिरफ्तार करने में मदद मिलती है।

हालांकि भू-राजनीतिक स्तर पर मतभेद हो सकते हैं, परन्तु कानून प्रवर्तन के लिए कानून के शासन को बनाए रखने पर ध्यान दिया जाना चाहिए और इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि जांच हमें कहां ले जा रही है, या पुलिस के लिए महत्वपूर्ण जानकारी कहां से आ रही है।

वास्तव में, आज मजबूत अंतर-क्षेत्रीय पुलिस व्यवस्था एक वास्तविकता है और हम कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच सीमा पार सूचानाओं का ऐसा आदान-प्रदान देख रहे हैं, जैसा वैश्विक इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया था। भारत जैसे सदस्य देशों में कानून प्रवर्तन की प्रतिबद्धता और पेशेवर दृष्टिकोण, इंटरपोल को वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं।

अंतरराष्ट्रीय कानून प्रवर्तन में भारत के योगदान को स्वीकार करते हुए, पिछले साल महासभा ने केंद्रीय जांच ब्यूरो के विशेष निदेशक प्रवीण सिन्हा को एशिया के लिए कार्यकारी समिति का प्रतिनिधि चुना।

भारत के समृद्ध इतिहास और भविष्य के दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि में, दुनिया भर के प्रतिनिधि आज के सबसे महत्वपूर्ण आपराधिक मुद्दों के समाधान के लिए इकट्ठा होंगे और भविष्य के खतरों से निपटने के लिए संयुक्त प्रयासों को जारी रखने के तरीकों पर विचार-विमर्श करेंगे। पूरे वर्ष के दौरान संगठन का सबसे महत्वपूर्ण आयोजन है महासभा की बैठक और मैं इस आयोजन के लिए नई दिल्ली से अधिक उपयुक्त जगह के बारे में कल्पना नहीं कर सकता।

अमेजन, फ्लिपकार्ट जैसी कंपनियों को मात देने की तैयारी में भारतीय डाक

राष्ट्रीय डाक सप्ताह के दौरान लोगोयुक्त पैकेजिंग सिस्टम की शुरुआत

संवाददाता

बोकारो : अमेजन, फ्लिपकार्ट, मीशो जैसे नामी-गिरामी पार्सल कंपनियों की तरह अब भारतीय डाक भी सुरक्षित तरीके से आकर्षक पैकेजिंग की व्यवस्था शुरू कर चुका है। यानी आने वाले समय में भारतीय डाक ऐसे प्रयासों की मदद से इन कंपनियों को भी मात देने की तैयारी में जुट चुका है। राष्ट्रीय डाक सप्ताह के तहत मेल डे के अवसर पर इसकी शुरुआत की गई। सहायक डाक अधीक्षक शंकर कुजूर ने बोकारो के सेक्टर-2 स्थित प्रधान डाकघर में फीता काटकर पार्सल पैकिंग काउंटर का उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि अब ग्राहकों को अपने घर से या कहीं बाहर से पैकेजिंग कराकर पार्सल कराने की जरूरत नहीं पड़ेगी। डाकघर में विभिन्न आकार के डिब्बे इस कार्य के लिए उपलब्ध कराए गए हैं। उन डिब्बों पर भारतीय डाक का अपना लोगो रहेगा। मौके पर डाकपाल सतीश कुमार, डाक सहायक कौशल कुमार उपाध्याय, गोविंद आदि मौजूद रहे।

उल्लेखनीय है कि विश्व डाक दिवस के उपलक्ष्य में डाक विभाग की ओर से हर साल डाक सप्ताह मनाया जाता रहा है। इसके तहत हर दिन विभिन्न तरह के कार्यक्रम आयोजित कर आमलोगों को डाक विभाग से जोड़ने के अनूठे प्रयास किए जाते हैं। इसकी शुरुआत 9 अक्टूबर को विश्व डाक दिवस से हुई। इसके बाद 10 अक्टूबर को वित्तीय सशक्तिकरण दिवस, 11 अक्टूबर को फिलाटेली डे, एवं आजादी का अमृत महोत्सव तथा 12 अक्टूबर को मेल एंड पार्सल डे के बाद अब 13 अक्टूबर को इसका समापन अंत्योदय दिवस के साथ हुआ।

बीएसएल के एसएमएस- न्यू में उत्पादन का नया कीर्तिमान

संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के दक्ष कर्मियों ने एक बार अपनी कर्मठता का कुशल परिचय दिया है। बीएसएल की एसएमएस- न्यू टीम ने आधुनिकीकरण के बाद पहली बार एक कन्वर्टर से एक सीक्वेंस (क्रम) में 20 हीट बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। गुरुवार को बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश अपने वरिष्ठ सहयोगियों के साथ एसएमएस-न्यू जाकर टीम एसएमएस-न्यू को इस उपलब्धि पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कर्मियों को अपने हाथों से मिठाई खिलाई और फूल भेंट कर उनकी हौसला अफजाई की। श्री प्रकाश ने एसएमएस-न्यू के अधिकारियों एवं कर्मियों को आने वाले समय में भी बेहतर प्रदर्शन के इस सिलसिले को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक (एसएमएस-न्यू) अरविन्द कुमार सहित एसएमएस-न्यू के अन्य वरीय अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि आधुनिकीकृत एसएमएस-न्यू के कास्टर से विगत वर्ष 28 जनवरी को प्रथम स्लैब की कास्टिंग की गई थी। एसएमएस-न्यू के परिचालन में आ जाने पर बीएसएल में अब एक सौ प्रतिशत इस्पात का उत्पादन कंटीन्यूअस कास्टिंग रूट से किया जा रहा है, जो अधिक ऊर्जा दक्ष है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद समिति की बैठक में बोले प्रधानमंत्री-

2047 तक ग्लोबल लीडर बनेगा भारत

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 7 लोक कल्याण मार्ग पर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद समिति (सीएसआईआर सोसायटी) की बैठक की अध्यक्षता की। प्रधानमंत्री वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के अध्यक्ष भी हैं। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह, जो सीएसआईआर के उपाध्यक्ष हैं तथा केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल सीएसआईआर सोसायटी के अन्य सदस्यों के साथ प्रधानमंत्री इस बैठक में उपस्थित थे। इसमें सरकार में अन्य मंत्रालयों के सचिव, उद्योगपति और प्रख्यात वैज्ञानिक भी शामिल हुए। इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने पिछले 80 वर्षों में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के प्रयासों की सराहना की और वर्ष 2042 के लिए विजन विकसित करने का आग्रह किया, जब सीएसआईआर 100 वर्ष का हो जाएगा।

उन्होंने पिछले 80 वर्षों की यात्रा के अभिलेखीकरण के महत्व पर भी प्रकाश डाला, जो अब तक हुई प्रगति की समीक्षा करने में सहायक बन सकता है और उन कमियों के क्षेत्रों की पहचान कर सकता है, जिन्हें ठीक किया जा सकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रौद्योगिकी को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिक, वाणिज्यिक और सामाजिक घटकों का एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय के प्रमुखों से इस तरह के केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान तथा विकास को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए 'एक व्यक्ति एक प्रयोगशाला' दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहा। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि सभी प्रयोगशालाओं का एक आभासी शिखर सम्मेलन नियमित रूप से आयोजित किया जा सकता है, जिसमें वे एक दूसरे के अनुभव से नई चीजें सीख सकते हैं। प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिक समुदाय से अनाज और बाजरे की नई किस्मों में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने के लिए तकनीकी समाधान लाने का आह्वान किया, ताकि उपज और उसकी पोषण सामग्री में सुधार हो सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से स्वदेशी खाद्य उत्पादों के उच्च पोषण मूल्यों की एक ऐसी सूची विकसित करने को कहा, जो उनकी वैश्विक स्वीकार्यता को बढ़ाने में मदद करेगा। उन्होंने उद्योग और अकादमिक एवं अनुसंधान संगठनों का भी आह्वान किया कि वे अधिक एकीकृत होकर निर्बाध रूप से काम करें तथा भारत की ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ही चक्रीय (सर्कुलर) अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दें और सतत विकास की दिशा में आर्थिक रूप से व्यवहार्य समाधान विकसित करें।

प्रधानमंत्री ने न केवल भारत के लिए, बल्कि विश्व के लिए नई प्रौद्योगिकियों का विकास करने और हरित ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करते हुए ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए नए दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान से लेकर छात्रों की रुचि, कौशल सेट और दक्षताओं के मानचित्रण तक विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, जो भविष्य के भारत और दुनिया की मांगों को पूरा करने के लिए उन्हें बेहतर ढंग से तब अनुकूल बनाएगा, क्योंकि अब हम भारत को वैश्विक नेता बनाने के उद्देश्य से विजन 2047 की ओर आगे बढ़ेंगे।

इससे पहले, बैठक में अपने शुरूआती संबोधन में डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस वर्ष जब भारत ने आजादी के 75 साल पूरे किए हैं, तभी वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने अपने 80 वर्ष भी पूरे कर लिए हैं और दोनों ने एक साथ यात्रा की है।

उन्होंने उद्योग, शिक्षा और अनुसंधान के एकीकरण, समन्वयन और वहां व्याप्त जड़ता को समाप्त करने पर जोर दिया। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीएसआईआर की वर्तमान उपलब्धियों और योगदान पर एक प्रस्तुति दी तथा भारत की पहली हाइड्रोजन ईंधन सेल बस, जम्मू-कश्मीर में बैंगनी क्रांति की शुरुआत करने और भारत के समृद्ध पारम्परिक ज्ञान पर आधारित नवाचार को बढ़ावा देने के लिए पारम्परिक ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय (टीकेडीएल लाइब्रेरी) खोलने जैसे हाल के प्रयासों पर प्रकाश डाला। एमआरएनए प्लेटफॉर्म प्रौद्योगिकी के माध्यम से भविष्य में सम्भावित महामारियों के लिए तैयारी, युवा वैज्ञानिक नेतृत्व का सम्वर्धन एवं पोषण और स्थायी स्टार्ट-अप्स एवं जिज्ञासु आभासी प्रयोगशाला के माध्यम से स्कूली छात्रों तक पहुंचना, कुछ ऐसी अन्य प्रमुख पहलें थीं, जिन्हें सीएसआईआर की महानिदेशक द्वारा उजागर किया गया था। उन्होंने सीएसआईआर विजन 2030 की कार्य योजना भी प्रस्तुत की, जो राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और विजन@2047 के साथ संरेखित है।